ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

यतः पिण्डे तथा ब्रह्ममाण्डे – पं0 दीनदयाल उपाध्याय

Thus Pinde and Brahmamande - Pandit Deendayal Upadhyay

Paper Submission: 05/02/2021, Date of Acceptance: 24/02/2021, Date of Publication: 25/02/2021

पीयूष कुमार श्रीवास्तव
पूर्व शोधछात्र
समाजशास्त्र विभाग,
महात्मा गांधी चित्रकूट
ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, सागर,
मध्यप्रदेश भारत

सारांश

पं. दीनदयाल उपाध्याय कहते हैं कि व्यक्ति जिन अर्थों में भारतीय दर्षन में प्रयुक्त हुआ है वह मात्र अकेला व्यक्ति नहीं है बल्कि व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राश्ट्र, राष्ट्र से विष्व, विष्व से ब्रह्मांड, ब्रह्मांड से परमेश्ठी यह एक निरंतर विकास क्रम है। भारतीय दर्षन में नर से नारायण का दर्षन करने की बात स्वीकार की गई है। भारतीय ज्ञानदर्शन की परंपरा में परमाणु से संपूर्णता तक, अणु से ब्रह्मांड तक भीतर–बाहर जो भी अभिव्यक्ति है उस सब में एकात्मता है। अतः हमारी संपूर्ण व्यवस्था का केन्द्र मानव होना चाहिए जो "यत पिंडे तत् ब्रह्मांडे" के न्याय के अनुसार समश्टि का जीवमान प्रतिनिधि है। एकात्मक मानव दर्शन के आधार पर ही वैष्विक जगत को जीवन की सभी व्यवस्थाओं का विकास करना होगा और इसके लिए एकात्म मानववाद एक सार्वभौमिक व्यावहावरिक दर्शन के रूप में हमेशा वैश्विक जगत का मार्गदर्षन करता रहेगा।

Pandit Deendayal Upadhyay says that the person in the sense in which Indian philosophy is used is not merely a person but a person from family, family to society, society to nation, world to world, universe to universe, God to universe, it is a constant Development is in order. In the Indian philosophy, it has been accepted to show the male to Narayan. In the tradition of the Indian Enlightenment, there is unity in everything from atom to completeness, from atom to universe, from inside to outside. Therefore, the center of our entire system should be human, who according to the justice of "Yat Pinde Tattva Universe", is the living representative of the society. On the basis of unitary human philosophy, the global world will have to develop all the systems of life and for this, Integral Humanism will always be guiding the global world as a universal practical philosophy.

मुख्य शब्द : यतः पिण्डे, ब्रह्मांडे, मानव, समष्टि।
Thus, Objects, Cosmos, Human Beings, Society.

प्रस्तावना

भगवत्कृपा व भगवद्भय से मुक्त ने, प्राकृत मानव ने प्रकृति विजय एवं विष्व विजय के अभियान संयोजित किए। साहसपूर्वक खोज लिए गए नए–नए भू प्रदेषों पर यूरोपीय साम्रज्यों का निर्माण हुआ। बीसवीं सदी इन साम्राज्यों को चुनौती की सदी थी। राश्ट्रवाद साम्राज्यवाद पर प्रहारक बन गया था। पष्चिम का ज्ञान–विज्ञान पष्चिम के साम्राज्यवाद के माध्यम से ही एषिया व अफ्रीका के महाद्वीपों में पहुंचा। पष्चिम के संपर्क से इन समाजों की चिंतनधारा निर्णायक रूप से प्रभावित हुई, लेकिन एषियाई राश्ट्रवादी मानस पष्चिमी साम्राज्यवाद के साथ–साथ पष्चिमी ज्ञान की प्रभुता को भी स्वीकार करना अपने स्वाभिमान पर चोट समझता था। अतः उसने पष्चिम के ज्ञान को नकारा। दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राश्ट्रवाद की इसी धार की उपज थे।

अध्ययन का उददेश्य

पं0 दीन दयाल उपाध्याय के यतः पिण्डे तथा ब्रह्ममाण्डे के दर्शन मे प्रकाश डालना है। जिससे वर्तमान परिपेक्ष मे उनकी विचार धारा को आत्मसात कर उसे प्रसांगिक बनाया जा सके।

भारतीय संस्कृति की कल्पना रही है कि जो पिण्ड (षरीर) में है। वही ब्रह्माण्ड में है। पिण्ड ब्रह्माण्ड का ही स्वरूप है। एक बूँद जल मे जो तत्व पाये जाते है वही सारे तत्व समुद्र के जल में पाये जाते है। दोनो में कोई अन्तर नही है।

'एकात्म मानववाद' की व्याख्या करते हुए उपाध्याय जी कहते है – " हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था का केन्द्र ' मानव ' होना चाहिये। जो ' यत् ' पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे न्याय के अनुसार समष्टि का जीवमान प्रतिनिधि एंव उसका उपकरण है। भौतिक उपकरण मानव के सुख के साधन है, साध्य नही। जिस व्यवस्था मे पूर्ण मानव के स्थान पर एकांगी मानव का ही विचार किया जाये वह अधूरी है। हमारा आधार एकात्म मानव है जो एकात्म समष्टियो का एक साथ प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखता है। एकात्म मानववाद के आधार पर हमे जीवन की सभी व्यवस्थाओ का विकास करना होगा।[1]

इस प्रकार से हम देखते है कि भारतीय संस्कृति मूलत : अभेदमूलक अवधारणा पर आधारित है। जहां अभेद पूरकता एकता संस्कृति का परिणाम है। वही भेद विकृति मूलक तथा अज्ञान जनित है। जो कि एकात्म मानववाद का स्वरूप भी है।

मुम्बई मे उपाध्याय जी द्वारा दिये गये भाषण मे उन्होने कहां – हमने मानव के समग्र एव संकलित रूप का थोडा सा विचार किया है। इस आधार पर हम भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यो के साथ राष्ट्रीयता प्रजातंत्र, समता और विश्व एकता के आदर्शो के समन्वित रूप मे रख सकेगे। इनके बीच होने वाला विरोध नष्ट होकर वे परस्पर पूरक होगे। मानव अपनी खोयी हुई प्रतिष्ठा और जीवनोद्देश्य को प्राप्त कर सकेगा।''[2]

अतः हम देखते है कि उपाध्याय जी की सम्पूर्ण चिन्तन का आधार एकात्म मानववाद ही रहा है। दीनदयाल जी कहते है कि – "जहां एकात्मवाद है , जिस संस्कृति मे 'सर्व खाल्विद ब्रह्म, नेंह नानास्ति किन्चन ,एकमेवाद्वितीय ब्रह्म आदि ऐसी वेद घोषणाए और एकात्मवाद के प्रचार विद्यमान है'' वहां समाजवाद, साम्यवाद तो बाहरी वस्तु हो जाता है।''[3] आगे पं0 दीनदयाल जी ने सम्पूर्ण मानवता के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुये कहां है कि – ''यह ऐसा सिद्धान्त है जिसमे बुद्धि सार्वभौमिकता प्राप्त कर लेती है। जो सार्वभौमिक प्रकृति के हो उनकी विचारधारा वास्तव मे केवल मानव जाति तक ही सीमित रहती है''।[4]

दीनदयाल जी चाहते थे कि मानवीय चेतना सर्वव्यापक चेतना मे विकसित हो। उनकी कल्पना सम्पूर्ण सांसारिक राज्य की थी जिसमे सब राष्ट्रो संस्कृतियो का योगदान हो और एक मानव धर्म की जो सारे धर्मो के योग से परिपूर्ण है।

दीनदयाल जी एकात्म मानववाद पर आधारित आर्थिक विकेन्द्रीकरण की व्यवस्था को मानव के सुखी होने का आधार माना है । जिसकी सम्पूर्ण व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु मानव हो जो 'यत् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे' के न्याय के अनुसार समिष्ट का जीवमान प्रतिनिधि तथा उसका उपकरण है।

अर्थ का अभाव और प्रभाव दोनो समाज मे विषमता लाते है। आचार्य चाणक्य के अनुसार – " सुखस्य मूलम् धर्म : , धर्मस्य मूलम् अर्थः'' अर्थात सुख धर्ममूलक है और धर्म अर्थमूलक।[5]

भारतीय संस्कृति के केन्द्र मे धर्म प्रमुख रहा है। परन्तु धर्म भी अर्थ के बिना टिक नही सकेगा। यह बात व्यक्ति और समाज दोनो पर समान रूप से लागू होती है।

अर्थ का अभाव होने पर व्यक्ति के लिये कर्तव्य रूप धर्म का पालन करना भी कठिन हो जाताहै। कहावत है कि – " बुभूक्षितः किं न करोति पापम् " अर्थात भूखे व्यक्ति के पैर गलत मार्ग पर चलने लगते है। आधार भूत आवश्यकताओ के लिये भी धनवान लोगो पर निर्भर रहना पडता है जिससे ऐसे व्यक्ति के दुराचरण पर भी आंख बंद करनी पडती है।[6]

इस प्रकार की आर्थिक विषमता को दूर करने के लिये उन्होने अर्थायाम का सिद्धान्त बताया। अर्थ के अभाव और प्रभाव दोनो से समाज को मुक्त रखकर समाज मे एक योग्य व्यवस्था का निर्माण करना ही भारतीय संस्कृति मे अर्थायाम कहलाता है।

दीनदयाल जी के अनुसार ''जिस प्रकार प्राणायाम मनुष्य के स्वास्थय के लिये हितकारी है, उसी प्रकार अर्थायाम देश की अर्थ– व्यवस्था के लिये आवश्यक है।''[7] दीनदयाल जी ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अर्थात मानव जाति के पूर्ण सुख की कल्पना किया था। जहां कोई दुःख दारिद्रय न हो। समाज का प्रत्येक व्यक्ति (पिण्ड) सुखी रह सके तभी समिष्ट (ब्रह्माण्ड) के सुख की बात कही जा सकती है।

इसी को सम्पूर्ण चराचर जगत मे एकात्म भाव की अवधारणा कह सकते है। जहां प्रत्येक जीव को जीने का समान अधिकार हो।

इसके अनुसार हम कह सकते है कि "विराट' अनेक छोटी इकाईयो का योग नही है और सुक्ष्म विराट का छोटा टुकडा न होकर उसका लघु चित्त होता है। वटवृक्ष विराट है, बीज सूक्ष्म है। बीज मे वृक्ष अपनी सम्पूर्ण विशालता सहित समाया हुआ है और वही सूक्ष्म बीज विशाल वृक्ष बन जाता है।''[8]

अतः सूक्ष्म और विराट व्यष्टि एवं समष्टि तथा मनुष्य और समाज मे कोई द्वन्द नही है, एकात्म भाव है जो जीवन को टुकडो मे न बांटता। यह खण्ड दृष्टि नही समग्र दृष्टि प्रदान करता है।

पाश्चात्य दार्शनिक कार्ल मार्क्स के अनुसार – " बीज वाद है , प्रस्फुटन प्रतिवाद है और वृक्ष संवाद है। तदनुसार – पूंजीवाद ' वाद ' है। वर्ग संघर्ष 'प्रतिवाद ' समाजवाद संवाद है।''[9]

डा0 मुरली मनोहर जोशी जी कहते है कि – " भारतीय संस्कृति का सार ब्रह्माण्ड मे विद्यमान विविधता मे मूलभूत एकता को स्वीकार करता है। अति प्राचीन काल मे भारतीय ऋषि – मुनियो ने ' यत् पिण्डे तदब्रह्माण्डे ' इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। जो सम्पूर्ण मे है वही उसके अंश मे है। अर्थात अंश तथा पूर्ण एक ही पदार्थ के द्योतक है। भारतीय दर्शन पर आधारित समाज रचना – आधुनिक द्वन्दो को सुलझाने मे समर्थ है।''[10]

दीन दयाल जी ने व्यक्ति को न तो 'पूर्ण सत्ता' माना है न अपूर्ण। उनके अनुसार – ''व्यक्ति न तो पृथक रूप से पूर्ण सत्ता है। न ही अपूर्ण वरन वह समष्टि तथा सृष्टि के साथ एकात्म सत्ता है। सृष्टि समष्टि व व्यक्ति अविभक्त इकाई है।''[11]

इस प्रकार से हम देखते है कि दीनदयाल जी ने समाज को समग्रता के साथ विकास का प्रयास किया है। उन्होने सम्पूर्ण सृष्टि को एकात्म भाव से सुखी होने पर ही ब्रह्माण्ड (राष्ट्र) के सुखी होना माना है। उनके अनुसार समाज प्रत्येक नागरिक जब सुखी होगा तभी सुखमय समाज की कल्पना साकार हो सकेगी। अर्थात प्रत्येक पिण्ड (मानव) के सुखी होने पर राष्ट्र – वृक्ष (बह्माण्ड) सुखी हो सकता है।

निष्कर्ष

जो 'पिंड' मे है वही 'ब्रह्माण्ड' मे है भारतीय दार्शनिको की यह पुरानी मान्यता है। 'अंश' एवं 'सम्पूर्ण' तत्वतः एक है, यह इस दार्शनिक तत्व की निष्पन्ति है। इसी मे से 'एकात्व' अथवा 'अद्वैत' के दर्शन का प्रचलन हुआ। 'सम्पूर्ण चराचर जगत् मे एकात्म भाव की अवधारणा भारतीय दर्शन की विशेषता है। 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे 'जो क्षुद्र मे है, वह ही विराट् मे भी है। इस व्याख्या के अनुसार 'विराट्' अनेक छोटी इकाईयो का योग नही है और 'सुक्ष्म' विराट् का छोटा टुकडा न होकर उसका लघु 'चित्त' है। वटवृक्ष विराट् है, वही सूक्ष्म भी है। अतः सुक्ष्म और विराट् व्यष्टि एवं समष्टि तथा मनुष्य एंव समाज मे द्वंद्व नही है एकात्म भाव है, जो जीवन को टुकडो मे नही बाटॅता। यह खण्ड दृष्टि नही, अपितु समग्र दृष्टि प्रदान करता है। ''आधुनिक विज्ञान भी 'एकात्म' के पक्ष मे है। दीनदयाल उपाध्याय कहते हैः '' हम तो स्वीकार करते है कि जीवन मे अनेकता अथवा विविधता है, किन्तू उनके मूल मे निहित विज्ञान को खोज निकालने का हमने सदैव प्रयत्न किया है। यह प्रयत्न पूर्णतः वैज्ञानिक है। विज्ञान वेत्ता का प्रयत्न रहता है कि वह जगत् मे दिखने वाली अव्यवस्था मे से व्यवस्था ढूॅढ निकाले, उनके नियमो का पता लगाए, तथा तदनुसार व्यवहार के नियम बनाए। रसायनशास्त्रियो ने सम्पूर्ण भौतिक जगत् मे से कुछ आधारभूत तत्व (म्समउमदजे) ढूॅढ निकाले तथा बताया कि सृष्टि उनसे ही बनी है। भौतिकी उसमे भी आगे गई। उसने उन तत्वो के मूल मे निहित शक्ति अर्थात चेतना को ढूॅढ निकाला। आज सम्पूर्ण जगत् मे चेतना का आविष्कार है।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *पृ– 104 डा0 राकेश दुबे एकात्म मानववादी शिक्षा दर्शन : सन 2014 ई0 : विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान कुरूक्षेत्र (हरियाणा)*
2. *पृ–103 तथैव*
3. *पृ– 163 डा0 विश्वामित्र पाण्डेय : महात्मा गांधी, डा0 राम मनोहर लोहिया और पं0 दीनदयाल उपाध्याय के समाजवादी विचार : निर्मल पब्लिकेशन्स , दिल्ली*
4. *पृ– 163 तथैव*
5. *पृ– 12 शरद अनन्त कुलकर्णी : पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन (खण्ड – 4) एकात्म अर्थनीति सुरूचि प्रकाशन, झण्डेवाला, नई दिल्ली।*
6. *पृ– 12 तथैव*
7. *पृ– 15 तथैव*
8. *पृ– 110 कौशल किशोर मिश्रा : शिवाली अग्रवाल : पं0 दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक दर्शन ; अनु बुक्स मेरठ।*
9. *तथैव*
10. *पृ – 314 डा0 महेशचन्द्र शर्मा : पं0 दीनदयाल उपाध्याय : कर्तत्व एंव विचार प्रभात पेपर बैक्स नई दिल्ली।*
11. *पृ – 316 तथैव*